ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 3 July 2020

संस्कृत वाङ्मय में आयुर्वेदीय तत्त्व : एक संक्षिप्त वर्णन

*विनोद कुमार सिंह

**डॉ0 सुदामा सिंह यादव

विश्व साहित्य में संस्कृत वाङ्मय का अत्यन्त महनीय स्थान रहा है। इसमें जीवन की बहुविध प्रकार से विवेचना किया गया है। मनुष्य की समस्याओं में स्वास्थ्य का विशेष महत्त्व है। स्वास्थ्य ही जीवन के सभी सुखों का मूल है। स्वस्थ व्यक्ति ही पौरुष कार्य करने में समर्थ हो सकता है। स्वास्थ्य ही आयु है। आयु का विशिष्ट ज्ञान ही आयुर्वेद है अर्थात् जिस में हितकर आयु तथा अहितकर आयु, सुखी आयु एवं दुःखी आयु का वर्णन हो तथा आयु के लिए हित एवंअहित आहार-विहार एवं औषध का वर्णनहो और आयु का मान बतलाया गया हो तथा आयु का वर्णन हो वह आयुर्वेद कहलाता है-

हिताहितं सुखं दुःखमायुस्तस्य हि
मानं च तच्च यत्रोक्तमायुर्वेदः स उच्चते।।[1]

जितने समय पर्यन्त शरीर एवं आत्मा का संयोग रहता है, उतने समय का नाम आयु है। इसी समय में प्राणी धर्मादि की सिद्धि कर सकता है। मानव आयुर्वेदशास्त्र द्वारा आयु के विषय में ज्ञान प्राप्त करता है, अतः इसका नाम 'आयुर्वेद' है-

आयुरस्मिन् विद्यते अनेन वाऽऽयुर्विन्दन्ति इत्यायुर्वेदः।[2]

आयुर्वेद का प्रयोजन-

---

*शोधच्छात्र, संहिता एवं संस्कृत विभाग, आयुर्वेद संकाय, का0हि0वि0वि0, वाराणसी
**असिस्टेण्ट प्रोफेसर, संहिता एवं संस्कृत विभाग, आयुर्वेद संकाय, का0हि0वि0वि0, वाराणसी

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 3 July 2020

आयुर्वेद का मुख्य प्रयोजन है रोगियों की रोग से मुक्ति मिलती है और स्वस्थ्य व्यक्तियों के स्वास्थ्य की रक्षा होती है। आचार्य चरक का उद्घोष है- स्वस्थ पुरुष के स्वास्थ्य की रक्षा करना और रोगी व्यक्ति के रोग को दूर करना है।

प्राचीन काल में औषधि-विज्ञान समुन्नत अवस्था में थी। सभी रोगों की चिकित्सा वनस्पतियों से की जाती थी। वनस्पतियों का ज्ञान रखने वाले को समाज में वैद्य, भिषक् और चिकित्सक कहा जाता था-

किमाहुस्तं वैद्याः न खलु भिषजस्तत्रनिपुणा।[3]

ये चिकित्सक रोगानिदान और रोगोपचार में सिद्ध हस्त होते थे। वे चरक संहिताएवं सुश्रुतसंहिता का विधिवत् परायण किये होते थे। तथा उनके विषय को उसी प्रकार आत्मसात किये होते थे। 'नैषधिचरित' से स्पष्ट उल्लेख प्राप्त होता है कि वैद्य लोग चरक एवं सुश्रुत संहिता के ज्ञानी होते थे।[4]कालिदास कृत मालविकाग्निमित्रम् के अनुसार वैद्य परम दयालु होते थे, जो दरिद्र एवं दीन रोगियों को निःशुल्क औषधि देते थे।

दरिद्र आतुर इव वैद्येनौष्पनीयमानमौषधमिच्छसि।[5]

दण्डी ने दशकुमारचरित में औषधि के साथ-साथ गरूण विद्या से विष समाप्त करने का भी उल्लेख किया है।[6]

रामायाण और महाभारत संस्कृत के आर्ष काव्य स्वीकार किये जाते हैं। यही से लौकिक संस्कृत साहित्य का विकास हुआ है। इसमें साहित्य एवं समाज के विविध तथ्यों का उद्घाटन किया गया है। यहां भी जीवन के दीर्घायु के लिए औषधि विज्ञान का महत्त्व प्रतिपादित है। रामायण में राम एवं लक्ष्मण की मूर्छा दूर करने के लिए जो औषधियां, संजीवकरणी और विशल्यकरणी, जिसका निर्माण स्वयं ब्रह्मा ने किया था।[7]

वैद्य रोग के उपचार के सन्दर्भ में सर्वप्रथम रोग का कारण जानने का प्रयास करते हैं। वे रोग-कारण को जानकर रोग-कार्य

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 3 July 2020

समाप्त हो जाने पर सदैव के लिए रोग से मुक्ति मिल जाती है। अभिज्ञान शाकुन्तलम में इसका स्पष्ट वर्णन किया गया है-

विकारं खलु परमार्थतोऽज्ञात्वाऽनारम्भः प्रतीकारस्य।[8]

अर्थात् व्याधि का सही निदान किये बिना उसकी चिकित्सा नहीं की जा सकती है। यहां शकुन्तला की सखियाँ उसके मनस्ताप का कारण जानकर उसका निवारण करना चाहती हैं। रोग का कारण बताने के सम्बन्ध में सौन्दरानन्द में आया है कि शारीरिक रोग है तो शीघ्र ही वैद्य को पूरा-पूरा विवरण बतला दो क्योंकि रोग को छिपा कर रोगी व्यक्ति शीघ्र भयानक विपत्ति में पड़ जाता है।

तदियं यदि कायिकी रूजा भिषजे तूर्णमनुनमुच्यताम्।
विनिगुह्य हि रोगमातुरो नचिरात् तीव्रमनर्थमृच्छति।।[9]

भोजन पान सदैव समय से करने के लिए मालविकाग्निमित्रम् में आया है कि चिकित्सकों के अनुसार अनियमित आहार शारीरिक विकारों के मूल हैं-

उचित वेलातिक्रमे चिकित्सकादोशमुदाहरन्ति।[10]

सौन्दरानन्द में रोग के दो प्रकार बताये गये हैं- प्रथम मानसिक और द्वितीय शारीरिक[11]। महाभारत की साम्यावस्था को मानसिक स्वास्थ्य कहते है, और कफ (शीत) पित्त (उष्ण) और वायु ये तीन शरीर के गुण होते है। इन गुणों के साम्यावस्था को शारीरिक स्वास्थ्य कहते है।[12]मानसिक सन्ताप के कारण सत्-रज्-तम् असमान हो जाते हैं। फलस्वरूप व्यक्ति मानसिक रोगी हो जाता है। वह अस्वभाविक कार्य करने लगता है। मेघदूत में यक्ष अपनी प्राण वल्लभा के वियोग से इतना व्यथित है कि वह बादल प्रेयसी को सन्देश भेजने का उपक्रम करता है।[13]

शारीरिक रोगों में कुछ तो सामान्य एवं साध्य रोग होते है और कुछ असमान्य एवं असाध्य। सामान्य रोगों में आपतलघन (लू

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 3 July 2020

लगना) शीर्ष, वेदना, प्रतिज्ञायोगन्धरायण में अक्षिरोग का वर्णन है-

क्रियतामस्य व्रणप्रतिकर्मेति।[14]

मृच्छकटिक में भी कुछ सामान्य रोगों का वर्णन है जैसे सन्धिक्षोभ, व्रण, ठण्ड लगना आदि का निरूपण किया गया है-

एषा खलु चातुर्थिकेन पीडयन्ते[15]

इन रोगों की चिकित्सा सामान्य रूप से घरेलु औषधियों से की जाती थी। जिसके प्रक्रिया से परिवारके सभी लोग अवगत रहते थे। असाध्य रोगों में चातुर्दिक ज्वर, कुब्ज, वातशोणित, यक्ष्मा आदि का उल्लेख संस्कृत साहित्य में सम्प्राप्त होता है-

यक्ष्मार्ता इव पादपाः[16]

यथावत शोणित अचितच्च वर्तन इति पश्यसि[17]

वैद्यो एवं चिकित्सकों द्वारा अनुमत उपचार विधि के साथ-साथ प्राथमिक एवं उपचार भी तत्कालीन समाज में प्रचलित था। आतप-ताप में शरीर को शीतलता प्रदान करने के लिए शरीरानुलेप किया जाता था।[18]मोच आये हुए अंग पर रक्त चन्दन का लेप लाभकारी समझा जाता था।[19]दशकुमारचरित में आया है कि एक पंगु व्यक्ति का इंगुदी का तेल से धन्यक चिकित्सा करता है जिससे उसके शरीर के सभी घाव (व्रण) सूख गये अर्थात ठीक हो गये।[20]। शिशुपाल के एक स्थल पर आया है कि जो लोग अपने शरीर को स्वस्थ रखना चाहते हैं उन्हें षड् रस (मधु, अम्ल, लवण, कटु, कषाय, तिक्त) संयुक्त रसायन का सेवन करना चाहिए।[21]यहाँ एक राजयक्ष्मा रोग का भी वर्णन आयाहै। राजयक्ष्मा का तात्पर्य ज्वर, खाँसी, रक्त, पित्तादि के प्रकोप इनके कुप्रभाव के समूह का नाम राजयक्ष्मा है।

यक्ष्मा रोग के पम्पा, ज्वर, व्याधि विकार, दुःख, यक्ष्मा, आतंक, गद, अबाध आदि शब्द पर्यायवाची बताये गये है।[22]शिशुपाल में कृष्ण को वैद्य बताया गया है और शिशुपाल को

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 3 July 2020

रोगी।[23]इस प्रकार सम्पूर्ण संस्कृत साहित्य में आयुर्वेदीय परम्परा का भली-भांति दिग्दर्शन होता है।

आयुर्वेद परम्परा में व्यायाम का विशेष महत्व है। इससे शरीर हृष्ट-पुष्ट बनता है। इसके अन्तर्गत खेलकूद एवं विविध क्रीड़ाए और कसरत आदि सम्मिलित है। आसन और नमस्कार वैद्यकीय दृष्टि से आदर्श व्यायाम है। 'स्वप्नवासवदत्तम्' में राजकुमारी पद्मावती के मुख पर कन्दुक क्रीड़ा-व्यायाम से उत्पन्न स्वेद बिन्दु दिखाई देता है।[24]यह स्वेद बिन्दु अनेक अवशिष्ट पदार्थों के रूप में बाहर निकलता है। जिससे शरीर में स्फूर्ति रहती है, शरीर स्वस्थ रहता है। शिशुपाल में आया है कि तेज ज्वर को समाप्त करने के लिए पसीना निकलना आवश्यक है।[25]ज्वर से पीड़ित व्यक्ति को गर्म कपड़े से ढक देने पर उसके शरीर से पसीना स्वतः निकलने लगता है और ज्वर उतर जाता है। अतः पसीना अवशिष्ट पदार्थ है, उसे शरीर से निकलना चाहिए।

उपसंहार-

संस्कृत साहित्य के इस विहंगमावलोकन से मनुष्य के स्वास्थ्य में आयुर्वेद का विशेष महत्व है। मनुष्य स्वास्थ्य का प्रकृति-प्रदत्त विविध औषधियाँ रक्षा करती हैं। यहाँ घरेलु उपचार के साथ-साथ वैद्यकीय उपचार विधि का महत्वपूर्ण स्थान है। साध्य एवं असाध्य तत्कालीन समय में रोगों का निदान कारण को जानकर किया जाता था। वैद्य की सलाहनुसार लोग अपने स्वस्थ्य की रक्षा करते थे। प्राचीन समय में औषधियों के अतिरिक्त रोग से बचने के लिए व्यायाम आदि की सम्प्राप्ति होती है। आयुर्वेद की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि अन्य वैद्यकीय विधियाँ रोगों को समाप्त करती है, वह भी उत्पन्न हो जाने पर। आयुर्वेद व्याधि का कारण ढूढ़ता है और कारण का उपचार कर रोगी को ठीक कर देता है। यही आयुर्वेद की विशेषता है जो संस्कृत वांङ्मय में

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 3 July 2020

बहुरूपेण प्राप्त होता है उसके ज्ञान से ही मनुष्य जीवेम शरदः शतम् की संकल्पना पूर्ण कर सकता है।

Copyright © 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 3 July 2020

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. च0सू0 1/41
2. सु0सू0 1/15
3. प्रतिमानाटकम् 3/1
4. नैषधिचरित 4/116
5. मालविकाअग्निमित्रम् 4/6
6. दशकुमारचरित पृ0 278-79
7. रामायाण युद्धकाण्ड 50/30
8. अभि0 अंक 3
9. सौन्दरानन्द 8/4
10. मालविकाअग्निमित्रम् अंक 2
11. सान्दरानन्द 8/3
12. वैद्यकीय सुभाषित साहित्यम् भास्करगोबिन्द घाणेकर 5/1-2
13. मेघदूत 1/5
14. प्रतिज्ञा योगन्धरायण अंक 2
15. मृच्छकटिक गद्यांश अंक 4
16. अविमारक ¼
17. स्वप्नवासवदत्तम् अंक 4
18. अभि0 अंक 3
19. मालविकाअग्निमित्रम् अंक 4
20. दशकुमार चरित पृ0 343
21. शिशुपालवधम् 2/43
22. वैद्यकीय सुभाषित साहित्यम् 33/4
23. शिशुपालवधम् 2/93
24. स्वप्नवासवदत्तम् अंक 2
25. शिशुपालवधम् 20/76

Copyright © 2020 Authors